D.P. Bhosale College, Koregaon

Tal. Koregaon, Dist. Satara (MS), INDIA
(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
NAAC Re-accredited 'A' Grade (CGPA 3.12)
ISO 9001:2015 Certified

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue - 171 (D)

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय परिषद स्मरणिका
घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

True Copy
Vice Principal
Kisanveer ... Vidyalay
Wai, Dist. Satara - 412 80

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal ISSN :
Impact Factor - (SJIF) - 6.261 (CIF) - 3.452(2015) (GIF) - 0.676(2013) 2348-7143
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की संस्कृति : कला और साहित्य April 2019
UGC Approved Journal

अनुक्रमणिका

क्र.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	घुमंतु 'सिकलगरी' समाज का स्वरूप एवं आकलन	डॉ. भानुदास आगेडकर	06
2	बंजारा समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	12
3	घुमंतु समाज की बोली भाषा	डॉ. बी.एस. बलवंत	15
4	वंचित आदिवासी साहित्य अब वैश्विक परिदृश्य में	डॉ. गोरख बनसोडे	18
5	'स्त्रीरा कोल्हाटी का' से स्त्री शोषण कि भयावहता	महेश भोसले	21
6	घुमंतु समाज का परिचय तथा महाराष्ट्र के घुमंतु समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ.जी.एम.भोसले	24
7	पारधी समाज : जात पंचायत	प्रा.एम.व्ही.वर्णेकर	27
8	घुमंतु धनगर जनजाति पे अध्ययन	डॉ. संगिता चित्रकोटी	30
9	बिना चेहरे के लोग में चित्रित घुमंतु जन-जातियो की कथा-व्यथा	डॉ. नितीन धवडे	33
10	घुमंतु जन – जातियों का चित्रण सुषमा मुनीद्र की कहानी 'देवता' के संदर्भ में	कु.अलका घोडके	36
11	आदिवासी पीडा की सशक्त अभिव्यक्ति : निर्मला पुतुल की कविताएँ	डॉ.कामायनी सुर्वे	39
12	संथीलो के साहित्य मे चित्रित वेदना	सचिन जाधव	44
13	वंचित एव घुमंतू आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	श्री. सूर्यकांत आमलापुरे	47
14	घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉं कविता पनिया	51
15	घुमंतु बंजारा जाति का स्वरूप एवं उनकी पहचान	प्रा. नीलम भोसले	53
16	घुमंतु जनजातियों अपनी नयी रोशनी की तलाश में	डॉ.सिंदु हालदे	58
17	जातपंचायत मे गावपंचायत – घुमक्कड समाज की बामदी	डॉ. एच.डी.टोंगारे, सतीशकुमार पडोळकर	60
18	रांगेय राघव के 'कब तक पुकारूं' उपन्यास मे करनट जाति के शोषण का चित्रण	प्रा.जे.ए. पाटील	63
19	बंजारा समाज की बोली भाषा का स्वरूप	डॉ. अनिता काकडे	68
20	घुमतु समाज मे कोल्हाटी समाज	डॉ. दिलीपकुमार कसबे	72
21	रमानाथ चव्हाण के 'चिन चेहरे के इन्सान' कहानी संग्रह मे चित्रित घुमंतू समाज की समस्याएँ	डॉ. एच.व्ही. काटे	76
22	बंजारा एव पारधी : परिवर्तन के संकेत	डॉ.भारत खिलारे	81
23	भारतीय समाज का सबसे वंचित समाज : किसान	प्रा.मारुफ मुजावर	87
24	घुमतु चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन	श्रीमती. आर. के गुल्ला	90
25	हिंदी कहानी साहित्य मे वंचित समाज का चित्रण	प्रा.पी. आर.रगडे	94
26	बंजारा समाज की गुप्त भाषागत शब्दावली : एक अध्ययन	डॉ.सुभाष राठोड	99
27	घुमतु समाज की बोली भाषा	डॉ.संग्राम शिंदे	103
28	वंचित अवाम की बुलंद आवाज : जयभारत –जयभीम	डॉ.सय्यद शौकतअली	107
29	घुमतु समाज की कलाओं के प्रकार और स्वरूप	श्री.अंकुश शेलार	110
30	घुमतु समाज का व्यवसायानुसार वर्गीकरण	डॉ.बाजीराव शेलार	114
31	घुमतु समाज का स्वरूप और उनके व्यवसाय	डॉ. महिपती शिवदास	118

True Copy
Vice ...
Kisanve ...
Wai, Dist...

Scanned with OKEN Scanner

"RESEARCH JOURNEY" International E- Research Journal ISSN :
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CII) - 3.452(2015), (GIF) - 0.676 (2013) 2348-7143
Special Issue 171(D) भूमंतू समाज की धर्मसंस्कृति : कला और साहित्य April-2019
UGC Approved Journal

भूमंतू "घिसाडी" समाज का स्वरूप एवं वास्तव

डॉ. भानुदास आगेडकर
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
किसन वीर महाविद्यालय,वाई
मोबा. 9921061161

पृष्ठभूमि

मध्ययुग मे समाज व्यवस्था का प्रमुख आधार मनुस्मृति आधारित वर्णव्यवस्था थी। इस समय चार वर्णो मे विभाजित समाज हर एक गॉव की पहचान थी। अर्थात मध्यकालीन भारत के ग्रामीण व्यवस्था का यही चित्र था। इन चार वर्णो मे से उपर के तीन वर्ण ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य सामाजिक स्तर की दृष्टि से आपस में एक दुसरे से हिन थे किंतु वर्ण से सवर्ण थे। भारतीय गॉवो मेंबसे इन तीनों वर्ण के लोगों की सेवा करने की जिम्मेदारी शुद्रों की थी। यह शुद्र वर्ण मनुस्मृति के अनुसार समाज का चतुर्थ वर्ण है। जिसे अस्पृश्य कहकर गॉव की दहलिज के बाहर रखकर उनसे पीढ़ी दर पीढ़ी गॉव के अंदर रहनेवाले उपर के तीनों वर्ण के लोग उनसे सेवा करवा के लेते आये है। इनमें से ब्राम्हण शिक्षा ग्रहण करके उर्वव तीनों वर्णों के लिए धार्मिक पूजा–पाठ करता आया है। क्षत्रिय गॉव की शत्रुओं से रक्षा करता है और वैश्य खेती,व्यापार करके उर्वव तीनों को सेवा देता है। तो चौथे शुद्र वर्ण के लोग गॉव के बाहर रहकर उपर के तीनों वर्ण के लोगों की आवश्यकता नुसार हर तरह की सेवा करते हैं। मध्ययुग से आज तक हमारा देश जिस गॉवों में बसा है उस हर एक गॉव का सामाजिक और भौगोलिक चित्र यही है। यह गॉव, स्वंयपूर्ण होता था अर्थात उस गॉव में रहनेवाले हर एक वर्ण के परिवार की, हर एक वर्ण के व्यक्ति की जीविका का साधन एक दूसरे पर अवलंबित होते हुए भी उसी गॉव में उपलब्ध होता था। यही कारण है कि आज भी गॉव को स्वयंपूर्ण ग्राम कल्पनासे नवाजा जाता है। वास्तव में हमारे देश में फैले हुए यह गॉव एक ओर आदर्श स्वंयपूर्ण ग्राम है मगर वही 'दुसरी ओर' यह वर्णाधारित,कर्माधारित जाति और उपजातिया में विभाजित अमानविय समाज व्यवस्था का दस्तावेज है। हम इसे दस्तावेज इसलिए कहते है क्येंकि यही गॉव हमें हमारे यहा मानवी समूह में निर्माण हुई जाति और उपजातियों की सही पहचान कराते है। कहा जाता है कि गॉव में बसे हुए उपर के तीनों वर्ण के लोगों की भौतिक जरुरते पूरी करने के लिए चौथे शुद्र वर्ण के लोगो में कर्माधारितअलग–अलग मानवी समुह निर्माण हुए। इन मानवी समुहों द्वारा किए जानेवाले काम के अनुसार उनकी सामाजिक पहचान होने लगी, जैसे लोहे का खेति उपयोगी औजार बनानेवाला लुहार, खेती उपयोगी लकडी का औजार बनानेवाला सुतार, जुते बनानेवाला चमार, इसी तरह खेती सहित गॉव के लोगों की छोटी–बडी जरुरते पूरी करने का काम करनेवाले मानवी समुह पिढि दर पीढ़ी वही सेवाकार्य करते रहे। हमारे यहा जाति और उपजातियों निर्माण होने के संकेत यही मिलते है। महाराष्ट्र में बसे हुए गॉवों में इस तरह की शुद्र वर्ण में कुल मिलाकर बारह जातियॉ मिलती है। जिन्हे हमारे यहां "बारा बलुतेदार'[1] कहते है। उपर के उच्च तीन वर्ण (ब्राम्हण, क्षत्रिय,वैश्य)और शुद्रों के यह बारा बलुतेदार (महार,मातंग चमार,नाभीक,कोली,कोष्टी माली सुतार,लुहार कुम्हार परीट और तेली)गॉव का सारा कारोबार करते है। जिसे मराठी में "गावगाडा'[2] कहते है। खेती करनेवाला किसान जिसे कुनबी कहा जाता है उसे खेती करने के लिए जरुरत के अनुसार यह सारे बलुतेदार परंपरा से औजार सहीत छोटे–मोटे खेती सहित अन्य उपयोगी उपकरन बनाकर देते थे। उनकी इस सेवा के बदले में उपर के तीनों वर्ण के लोग उनकी जीविका के लिए

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की भाषासंस्कृति ; कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

45

उन्हे सालभर मे से फसल काटने के वक्त केवल एक बार अनाज देते है। जिसे महाराष्ट्र में "बलुता" कहते है। जब गॉव उन शुद्रों की प्रमुख बारह जातियाँ अर्थात बारा बलुतेदार और कालांतर में उनमें उत्पन्न हुई अलग–अलग उपजातियों की जीविका की पूर्तता करने में असफल हुऐ तब उनमें से कुछ उपजातियों के शुद्र लोगों ने एक गॉव से दुसरे गॉवमें जाकर अपना डेरा (मराठी में पाल – फटे पुराने कपडों से बनाई झोपडी) डाला। फिर अपने उपजिविका की जरुरत पूरी करने के लिए ये लोग निरंतरता से एक गॉव से दुसरे गॉव,दुसरे गॉव से तीसरे गॉव भटकते रहने लगे। अपने परिवार के साथ सदियों से भटकनेवाले जातिसे शुद्र रहे इन लोगों को महाराष्ट्र में "भटके–विमुक्त"[4] और हिंदी में "घुमंतू"[5] लोग या घुमंतू जातियॉ कहा जाता है। महाराष्ट्र सरकार द्वारा शुद्रों के उपजातियों में से कुल 42 जन– जातियों को भटकनेवाली जातियों के रुप में स्विकारा हैं। किंतु मराठी भाषा में उनका अध्ययन करनेवाले श्री.रामनाथ चव्हान जी ने इनकी संख्या कुल 192 होने का दावा किया है। इन घुमंतू लोगों का गॉव के कारोबार (गावगाडा) के साथ या गॉव के आंतरिक व्यवस्था के साथ किसी भी तरह का सम्बध नही आता था। कहते है कि यह घुमंतू लोग गॉव के बाहर रहकर अपनी उपजीविका के लिए छोटे–मोटे काम के साथ–साथ लुट–पाट, चोरीया,लोगों को ठगाना, बाजार में दुकानदारों की नजर से बचकर माल उठाना, डकैती जैसे गुनाह के काम करते थे। परिणामतः इनमे सें अधिकतर घुमंतू जातियों को आंग्रेजों के शासनकाल में (सन 1871में)चोर,गुनहगार करार करते हुए उनकी वसाहतों को तार कम्पाउंड(कुंपन) के अंदर बंदिस्त बनाके रखा गया था। इन बंदिस्त लोगों पर तरह–तरह की कठोर पाबंदिया लगाई गयी थी। जैसे सुबह दोपहर श्याम तीनों वक्त पुलिस के सामने हाजिरी देना, एक गॉवं से दुसरे गॉव जाते समय उन गॉवों के मुखियों से अनुमती लेना आदि। आगे चलकर आजादी के बाद (सन 1952) भारत इन घुमंतू जातियों के लिए अँग्रजो ने बनाया हुआ गुनहगार कानून भारत सरकार द्वारा तार कम्पाउंड तोडकर रद्द करके उन लोगों को मुक्त किया गया। यही मुक्त हुए लोग और उनकी जातियां आज भटके–विमुक्त नाम से संविधानिक स्तर पर पहचानी जाती है। भले ही यह जन–जातियां आज विमुक्त है मगर परंपरा से उनपर जो गुनहगार जाति' की मुहर लगी है वह आज भी कलंकित दाग की तरह कायम है। क्योंकि आज भी महाराष्ट्र के किसी भी कोने में चोरी या डकैती या लुट–पाट हो जाती है तब पुलिस द्वारा सबसे पहले इन्ही लोगों को या इनकी झोपडीयों को बेरहमी से खंगाला जाता है। इस तरह का अमानवीय जीवन जीने वाले बयालिस घुमंतू जातियों में से एक घुमंतू जाती है –घिसाडी। यह घिसाडी लोग अन्य घुमंतू जन–जातियों के समान एक गॉव से दूसरे और दूसरे से तीसरे गॉवं जाकर अपने निर्वाह की व्यवस्था करते हुए वर्तमान समाज व्यवस्था में भी अपनी परंपरागत पहचान कायम रखते हुए दिखाई दे रहे है।

घुमंतू : घिसाडी जन–जाति का स्वरुप

महाराष्ट्र के अधिकतर गॉवो में रास्ते के किनारे या कभी–कभी गॉव के बिच चौराहे के समीप लुहारों के भाते के समान छोटासा भाता जलाकर लोहे के खेती उपयोगी छोटे–मोटे औजार जैसे – कुदाल,फावडा,कुल्हाडी, घास काटने के लिए आवश्यक छोटे औजार (मराठी में खुरप,विळी),लोहे के छोटे–मोटे हल, लकडी हल के नोकपर लोहे के टोक(फाळ), बैलगाडी के पहियों को लगाए जानेवाले लोहे के बाहरी आवरन (धाव) बनाकर किसानों को बेचने के साथ–साथ चाकू–छूरियों और कुल्हाडी को धारदार बनानेका काम करनेवाली घुमंतू जाति के लोगों की झोपडी कुछ दिनों के लिए बसाई हुई अक्सर दिखाई देती है। घुमंतू घिसाडी जाति की यही पहली पहचान है। यह लोग अपनी जन्मभूमि चित्तौड गड बताकर अपने आप को

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai Dist. Satara - 412 803

"RESEARCH JOURNEY" International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF) - 0.676 (2015)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की लोकसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

राजस्थानी अर्थात रजपूत समजते है। लोहे का काम करने के कारण महाराष्ट्र मे इन्हे लुहार जाति का संबोधन लगाया जाता है। हमारे यहां दिखाई देनेवाले घिसाडी लोग भी अपनी पहचान चित्तौडी लुहार,रजपूत लुहार या गाडी लुहार नाम से बताते है। गॉव के बारा बलुतेदार मे आनेवाला लुहार या लोहार गॉवगाडे का हिस्सा होता है। वह गॉव मे बसता है तो घिसाडी भटकता रहता है। दोनों लोहे का काम करते है मगर दोनों के बीच रोटी–बेटी या तत्सम व्यवहार नही होते। घिसाडी अपने–आप को महाराना प्रताप के वंशज बताकर हमारे यहां के लुहारों से उच्च कूलीन समझते है।

श्री.सूर्यनारायन या श्री.एकलिंग' जी' उनके कुलदैवत और मेवाडी उनकी भाषा होती है। इसके अतिरिक्त सांकेतिक या चोरभाषा का भी ये लोग आपसी संवाद के लिए उपयोग करते है।महाराष्ट्र में भटकनेवाली घुमंतू जन–जाति– जमातियों का सूक्ष्म अध्ययन करनेवाले मराठी के प्रसिध्द संशोधक श्री.रामनाथ चव्हान जी के अनुसार "महाराणा प्रताप यांच्याशी संबंध जोडणा–या घिसाडी जमातीचे लोक त्यांच्या काळात लढाई साठी उपयुक्त असणारी हत्यारे तयार करून सैन्याला पुरवत असत. लोखंडी व पोलादी शीरस्त्राण,भालेव बाणांची टोके, तलवारी,जांबिये,बिचवे, ही हत्यारेतयार करण्याचेच या लोकांचे मुख्य काम असल्याचे ते सांगतात. व ते स्वत:ला महाराणा प्रतापाचे एकनिष्ठ अनुयायी म्हणवतात.'[6]श्री. रामनाथ चव्हान जी के अनुसार मूल मेवाड प्रांत अर्थात राजस्थान का यह समाज भटकते–भटकते, महाराष्ट्र में आया है। और इतने सालों बाद आज भी यह समाज लोहे के वस्तु बनाकर बेचते हुए एक गॉव से दुसरे और दूसरे गॉव से तीसरे गॉव भटकता रहता है।

घुमंतू घिसाडी जाती की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मध्ययुगीन इतिहास के अनुसार सन 1568 मुगल बादशहा अकबर ने महाराणा प्रतापसिंह पर हमला करके उसे हराकरचित्तौडगड को अपने अधिपत्य मे लाया था। इस ऐतिहासिक घटनासे चित्तौडगड में रहनेवाले और महाराणा प्रतापसिंह पर गर्व करनेवाले तथा युध्द मे उपयोगीत होनेवाले लोहे के शस्त्र बनाकर देनेवाले राजपूत लुहारों को अपनी राजा की हार का अतिव दु:ख हुआ। उन्होने चित्तौडगड का त्याग किया और जंगल में भटकने लगे।गहन जंगल में भटकते इन लोगों ने यह कसम खाई कि जग तक अपने राजा की जीत नहीं होती तथा चित्तौडगड आजाद नही होता तब त कवे चित्तौडगड में कदम नही रखेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होने "एक जगह पर वसाहत न करने",पलंग पर न सोने की,आछे–पक्के घरमें न रहने जैसी अनेक कसमें खाई थी। आगे स्वयं राणा प्रतापसिंह ने अनेक बार अकबर से युध्द करके चित्तौडगड को आजाद करने का प्रयास किया मगर अंत में उन्हे ही चित्तौडगड छोडना पडा था। इस बात से दु:खी हुए रजपूत लुहारों ने अपनी जन्मभूमी रहे चित्तौडगड का ही हमेशा के लिए त्याग किया और भटकते–भटकते महाराष्ट्र तक आ पहुचे। यहा आने के बाद उन्हे जब भी कोई उनकी पहचान पुछते थे तब अपनी असली पहचान छुपाने क लिऐ वे लोग "लोहे का काम करनेवाले 'घोसंडी' गॉव के हम रहने वाले है" ऐसा बताते थे। यही उनक दवारा बताया गया घोसंडी गॉव का नाम धिरे–धिरे घिसाडी बनकर उनकी और उनके जाती की पहचान बनी होगी ऐसी एक कथा कही जाती है।मगर उसका प्रमाण नही मिलता।

घुमंतू घिसाडी जाति की आतंरिक व्यवस्था

घुमंतू–भटके–विमुक्त हर एक जाति की औरों से भिन्न अपनी एक स्वतंत्र आतंरिक व्यवस्था रही दिखाई देती है। अर्थात हर एक घुमंतू जाती के कुल–वंश,देवी–देवताऐं,पूजा–पाठ, विवाह पध्दतियॉ, श्रध्दा–अंधश्रध्दाऐं, सामाजिक – धार्मिक

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 80

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

सांस्कृतिक मान्यताएँ, रुढि–परंपराएँ, भाषा–व्यवहार, जातपंचायत आदि एक दूसरे से अलग है। इस दृष्टि से देखे तो घिसाडी जाती के लोगों ने भी अपनी एक स्वतंत्र व्यवस्था निर्माण की हुई दिखाई देती है। जिसका पालन आज तक इस समाज का हर एक व्यक्ति कर रहा है। जैसे–इनके विवाह लगातार सात दिन तक चलता है और इन सात दिनों में दुल्हन के पिता ने सभी महमानों को हर रोज एक नया पक्वान बनाकर खिलाना, पुरुष को दो शादीयां (बिवियॉ) करने की अनुमति, जाति के बाहर शादी न करना अगर किसी ने इस तरह की शादी की तो उसके साथ किसी भी तरी का व्यवहार न करना(मराठी में वाळीत टाकने) , जातपंचायत के पंचोने दिए हुए फैसने को विना शिकायत किए स्वीकारना,पंचो के निर्णय नुसार तलाक(काडीमोड)होने पर पुनर्विवाह करने की अनुमति, मरने के बाद उस व्यक्ति के मृत शरीर को दफनाने के बजाय उसका दहन करना,परिवार मे मरे हुए व्यक्ति के आत्मा को शांति और सुकून मिलने के लिए प्रयत्न करना, पति के मरने पर पत्नी ने सतिप्रथा का पालन करना, लडके के जन्म पर आनंद तथा लडकी के जन्म पर शोक व्यक्त करना, आपसी संवाद के लिए राजस्थानी भाषा तथा आरसी– पारसी भाषा का सांकेतिक भाषा के रुप में प्रयोग करना,जातपंचायत के मुखिया सहित सभी

पंचो का मान–सन्मान रखना और राजस्थान में स्थित पुष्कर नामक गॉव में हर साल कार्तिक पुर्णिमा पर घिसाडी जाति के देवता के लगनेवाले मेले में सम्मिलित होना आदि। साधरणतः महाराष्ट्र में दिखार्द देनेवाले घुमंतू घिसाडी विमुक्त जाति की आंतरिक व्यवस्था यही है। उसमें जातपंचायत को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। पारिवारिक कलह से लेकर समाज में उत्पन्न हुए बडी से बडी समस्याओं पर इनके पंच निर–क्षिरता से निर्णय देते है। पचों के समक्ष कोई गरीब नहीं होता नकोई अमीर। किसी जमाने में इस समाज के बुजुर्गो ने समाज की एकसंघता कायम रखने के लिए,रक्त और वंश शुध्दि के लिए अपने जाति बांधवों को आपसी व्यवहार,सामाजिक वर्तन तथा पारिवरिक जिम्मेदारियों के लिए आचरन की एक नैतिक चौखट बनाई थी। जिसने भी इस चौखट को तोडकर गुनाह किया,चाहे वह अमीर हो या गरीब इनकी जातपंचायत में सबके लिए समान न्याय दिया जाता है। अन्य घुमंतू जन –जमातियों से अलग इन्हाने भी अपनी स्वतंत्र पहचान कायम रखी है। उनकी जातिगत आतंरिक व्यवस्था में आनेवाले हर एक पध्दती और उनके रीति–रिवाज धर्म से हिंदु होते हुए भी अन्यो से कुछ हद तक पूरी तरह अलग से है। जिन की मराठी भाषा में श्री.रामनाथ चव्हाण जी ने अपने किताब में अत्यंत विस्तृत जानकारी देते हुए उनकी सही–सही पहचान कराई है। विस्तार भय के कारण हमने यहा केवल उनके रांकेत देने का प्रयास किया है।

घुमंतू घिसाडी जाती की आज की स्थिति

सन 1952 में पं जवाहरलाल नेहरु और यशवंतराव चव्हाण जी ने आंग्रेज सरकार द्वारा बंदिस्त किए गए जिन घुमंतू जन–जातियों को मुक्त किया थां, उनमें से एक थी यह घिसाडी जाती। जो विमुक्त होने के बाद भी गॉव–गॉव भटकते हुए लोहे के छोटे–मोटे खेती उपयोगी औजार बनाकर किसानों को बेचकर अपने जीविका की व्यवस्था करते थे। किंतु पिछले कुछ वर्षो से इस समाज के अधिकतर लोग अपने परिवारों के साथ शहरों और महानगरों में स्थाई रुप से बसे हुए नजर आने लगे है। लोहे के व्यवसय के अतिरिक्त ये लोग अब अपनी उपजीविका के लिए नौकरियॉ करने लगे है। एक ओर इनके बाल– बच्चे आज अन्य जाति के बच्चों के समान अॅग्रेजी माध्यम के स्कुलों में पढने लगे है। तो दुसरी ओर इस समाज के पढे–लिखे युवक अपने समाज के सामाजिक प्रगति और विकास के लिए तरह–तरह के संविधानिक प्रयत्न करते हुए दिखाई देते है। विमुक्त जन–जातियों के विकास के लिए आज केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा जिन विकासात्मक योजनाओं को लागू किया

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyala
Wai Dist. Satara - 412 8

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की समसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

गया है।उनका लाभ उठाते हुए भी इस घिसाडी जाति के लोग दिखाई देते है। विकास की प्रक्रिया मे मार्गक्रमण करनेवाले अन्य पिछडे जन–जातियों के समान घिसाडी समाज भी आज सामाजिक स्तर पर दो वर्गों में विभाजित हुआ है। इनमें से एक वर्ग है पुराणी पीढ़ी का जो अपनी पारम्पारिक रीति–रिवाजों का पालन करते हुए उनका आग्रह करते है तो, दुसरा वर्ग है पढे–लिखे घिसाडी युवकों का, जो, पुरणी और समाज विघातक मान्यताओ को नकारकर भारतीय समाज में अपनी नई पहचान बनाने के लिए प्रयत्न करता है। उनके प्रयत्न के अनुसार इस समाज प्रचलित अनेक रिवौनी प्रथाएँ बंद की गई है। फिर भी इन दो वर्गों के बीच में हमेशा तीज–त्योहार, शादी–ब्याह,जन्म–मृत्यु तथा जातपंचायत बिठाने जैसे कार्यक्रमों के अवसर पर वैचारिक संघर्ष होता रहता है। इनमें से एक को शाकाहारी (सुधारणावादी) और दूसरे को मांसाहारी (परम्परावादी) कहा जाता है। इनमें से परम्परावादी लोग, जातपंचायत सहित अपने पुराणे सभी रीति–रिवाजों का पालन अत्यत प्रामाणिकता से करते हुए दिखाई देते है। यही कारण है कि इतने सालों के बाद भी इनकी जातपंचायत का अस्तित्व जीवित रहा सुनाई देता है।

निष्कर्ष

महाराष्ट्र के बारा बलुतेदारों में आनेवाले लुहार या लोहारों के समान खेती उपयोगी लोहे के अवजार बनाकर किसानों को बेचनेवाला घिसाडी मूलतः एक घुमंतू जमात है। ये लोग अपने–आप को चित्तौडगड के महाराणा प्रताप के वंशज, अग्निवंशी मानते है। ये लोग गावगाडे का हिस्सा न होकर गॉव–गॉव भटकते रहते है। इनकी मातृभाषा मेवाडी (राजस्थानी) है। इसके अतिरिक्त ये लोग सांकेतिक भाषा काभी आपसी संवाद के लिए प्रयोग करते है। इनकी जातपंचायत सब के लिए समान न्याय देने का काम अत्यंत प्रमाणिकता से करती है। इनकी पंचायत अक्सर शादी जोडना,तलाक देना, आपसी झगड का निवारन करना, आपसी लेन–देन की शिकायत,अंतरजातीय विवाह आदी के कारण बिठाई जाती है। पंचायत का सारा खर्च जैसे शराब पिलाना,खान–पान देना आदी, शिकायत करनेवाला और जिसपर शिकायत है, दोनों को करना पडता है। पंचो द्वारा जो निर्णय दिया जाता है, उसका पालन सभी को अंत्यत कठोरता से करना पडता है। इसके अतिरिक्त बुजूर्गों ने बनाए गए सभी रीति रिवाजों का पालन पूरे समाजने करना आवश्यक होता है अगर किसीने उनका पालन नहीं किया तो पंचायत द्वारा उस व्यक्ति और उसके पूरे परिवार को समाज से बाहर रखा जाता है। आज उस समाज की स्थिती में काफी बदलाव आया है। उस समाज की पढी–लिखी युवा पिढी अपने बुजूर्गो के साथ संघर्ष करते हुए अपने घुमंतू पहचान को मिटाने की कोशीश करते हुए दिखाई देते है।यह समाज अभी साहित्य के दायरे में नही आया है। मराठी भाषा साहित्य में श्री. रामनाथ चव्हाण, लक्ष्मण माने, श्री.त्री.ना.आत्रे, श्री.य.दि.फडके आदि संशोधक साहित्यिकों ने महाराष्ट्र में भटकनेवाले जन–जातियों में से कुछ जातियों की साहित्य के माध्यम से पहचान कराने का प्रयत्न किया है। दलित, स्त्री और आदिवासी समाज का साहित्य में जिस तरह विमर्श हुआ है वसै इन भटकनेवाले विमुक्त–जन–जातियों पर हिंदी साहित्य में अधिक लिखा हुआ नहीं मिलता। गैत्रेयी पुष्पा द्वारा प्रस्तुत उपन्यास "आल्मा कबुतरी" जैसी रचनाएँ घुमंतू समाज के वास्तव जीवन का हिंदी पाठको को यथावस्तु परिचय कराते है। बंजारा घुमंतू जाति पर आज संशोधको द्वारा विशेष शोधकार्य हो रहा है। जिससे एसा लगता है कि इन घुमंतू जातियों की आनेवाली पढ़ी–लिखी पीढीयॉ अपना सदियों का दर्द,वंचितता,दुःख,वेदनाएँ, भटकते जीवन की परेशानियों को बिना हिचकते कविता,कहानी,उपन्यास,आत्मकथा,संस्मरण जैसी

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal | ISSN :
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013) | 2348-7143
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य | April-2019
UGC Approved Journal

अलग–अलग विधाओं के माध्यम से बिना हिचकिचाते प्रस्तुत करेगी। हमें थोडासा इंतजार करना पडेगा।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1. श्री. लक्ष्मण माने "उपरा" पृ 12
2. श्री. त्रीख ना अत्रे "गावगाडा" पृ 36
3. श्री. दया पवार "बलुत" पृष्ठभूमी
4. श्री. लक्ष्मण माने " उपरा " पृ. 41
5. डॉ. भरत सगरे "इक्कसवी सदी का हिंदी साहित्य पृ. 08
6. श्री. रामनाथ चव्हाण भटक्या–विमुक्तांची जातपंचायत खंड 2 पृ. नं. 214

True Copy

Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 80

Scanned with OKEN Scanner